बदलती राहें

Gunjan
वर्ष 01, अंक 25
धर्मशाला, सोमवार, 17 अगस्त 2015

नशे से उपजी दिमागी बीमारियों का बिना दवा इलाज करती है आरजीएमएस थैरेपी

शराब की लत के कारण उत्पन्न होने वाली दिमागी बीमारियों के इलाज के लिए रिपिटिटिव ट्रांस्क्रैनियल मैग्नेटिक स्टिमुलेशन यानी आरजीएमएस थैरेपी इन बीमारियों से जुड़ी दवाइयों का दबाव कम करने में भी मदद करती है। इस तकनीक से इलाज के चलते चिंता और अवसाद से लड़ने के लिए किसी प्रकार की दवाई का इस्तेमाल नहीं किया जाता। इसके कारण मरीज को ऐसी दवाओं के कारण होने वाले साइड इफेक्टस से नहीं जुझना पड़ता। साथ ही इन दवाओं की लत का शिकार होने से भी बचा जा सकता है।

इसके अलावा इस पद्धति से इलाज करवाने के लिए मरीज को संबंधित संस्थान की विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है। खासकर यह देखा जाता है कि नशा करने वाला व्यक्ति रिकवरी की प्रक्रिया पूरी कर चुका है या नहीं। ऐसे मरीज का उपचार तब तक नहीं शुरू किया जाता, जब तक यह बात पुख्ता न हो जाए कि वह नशे का सेवन पूरी तरह बंद कर चुका है और डिटाक्सिफिकेशन प्रकिया को पूरी कर चुका है।

आरटीएमएस से इलाज के लाभ

हालांकि आरटीएमएस तकनीक का विकास प्रारंभिक तौर पर तीव्र अवसादग्रस्तता विकार से मुक्ती पाने और ऐसी ही दिमागी स्वास्थ्य संबंधि स्थितियों से निपटने के लिए किया गया है, मगर नशे के इलाज में भी इसका भरपूर लाभ मिल रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार मादक द्रव्यों और शराब के सेवन की लत से लड़ने के लिए शारीरिक स्वास्थ्य से ज्यादा दिमागी और भावनात्मक स्वास्थ्य में सुधार की जरूरत होती है। सौभाग्य से आरटीएमएस थैरेपी के इस मामले में कई लाभ हैं। इससे व्यक्ति को दिमागी व भावनात्मक इच्छाशक्ति को सुधारने में मदद मिलती है।

दवाओं का इस्तेमाल न करने के लाभ

इस विधि से इलाज करवाने का एक बड़ा फायदा यह है कि इसके चलते नशे की लत का शिकार मरीज को दिमागी इलाज के लिए दी जाने वाली दवाएं लेने की जरूरत नहीं पड़ती है। एंटी-डिप्रेशन (अवसादरोधी) व एंटी-एनग्ज़ाइटी (चिंतारोधी) सेशन की तुलना में आरओएमएस सेशन में दवाएं नहीं दी जाती हैं। हालांकि दिमागी स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं में दवाएं आवश्यक होती हैं, मगर इनका नशे की लत से कोई संबंध नहीं होता है। लिहाजा दवाओं का इस्तेमाल करना नशे की लत की प्रारंभिक स्थितियों में उचित नहीं होता, क्योंकि नशे की लत के चलते दिमागी परेशानी में दी जाने वाली कुछ दवाईयां खुद नशीली होती हैं। ऐसे में इन दवाओं का इस्तेमाल न करना कई प्रकार के लाभ प्रदान करता है।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ

आरटीएमएस पद्धति से इलाज करने के विशेषज्ञ डाक्टर डायरल एप्लिटन सलाह देते हैं कि जब किसी के न्यूरोट्रांस्मीटर्स वापसी की स्थिति में होते हैं, तब आरटीएमएस थैरेपी सेशन का इस्तेमाल करना सर्वोत्तम होता है। ऐसा शराब की लत के इलाज के प्रारंभिक चरणों में ही हो पाता है। साथ ही वह बताते हैं कि एडिक्शन के इलाज के प्रारंभिक चरणों में एंटी-डिप्रेसेंट और एंटी-एनक्ज़ाइटी दवाईयों की उपेक्षा करके ही एक प्रकार की लत से दूसरी लत में प्रवेश करने की स्थिति के खतरे को रोका जा सकता है।

आरटीएमएस पद्धति से इलाज के कुछ फायदे इस प्रकार से हैं:

1. दिमागी बीमारियों की दवाओं से मितली आना और अन्य शरीरिक दुष्प्रभाव सामने आते हैं। आरटीएमएस से ऐसा नहीं होता
2. दवाओं के इस्तेमाल से इस्तेमाल करने वाले के वजन में बदलाव आता है, जो आरटीएमएस से नहीं होता।
3. इन दवाओं से एलर्जी रिएक्शन भी हो सकता है, आरटीएमएस से ऐसा कुछ नहीं होता।
4. इन दवाओं से एक लत से बाहर निकलकर दूसरी लत का शिकार होने की संभावना होती है। जबकि आरटीएमएस पद्धति में ऐसी कोई संभावना ही नहीं उठती।

नशे की लत के अंतर्निहित कारणों के इलाज के लाभ

मादक द्रव्य या शराब के नशा हमेशा अवसादग्रस्त विकारों या इसी प्रकार के लक्ष्णों का कारण नहीं होते। डा. एप्लिटन बताते हैं कि इलाज की जरूरत सेल्फ-मेडिकेटिंग (खुद दवाई खान) वाले मरीजों के लक्ष्णों से निपटने की होती है।

सेल्फ-मेडिकेटिंग से अभिप्राय उन महिलाओं व पुरुषों से होता है, जो गलत दवाएं या शराब का इस्तेमाल अपने चिंता की भावनाओं और अवसाद व अन्य भावनात्मक चुनौतियों से निपटने के लिए करते हैं।

जब नशे की लत के कारण दिमागी स्वास्थ्य विकार, मस्तिष्कघात या अवसाद से जुड़े विकार उत्पन्न होते हैं, तो नशे की लत के इलाज के दौरान मरीज की दिमागी हालत पर ध्यान केंद्रीत किया जाता है।

आरटीएमएस सेशन खासतौर पर नशा की लत का शिकार मरीजों की दिमागी हालत को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया होता है।

इस थैरेपी के जरिये दिमाग में मौजूद अवसाद व चिंता पैदा करने वाले भौतिक घटकों का पता लगाया जाता है। इनका पता लगाने के बाद इनको सुधारने के लिए इलाज की प्रक्रिया शुरू की जाती है।

शादी की खुशियां छीन लीं पति से मिले एचआईवी वायरस ने

- जीवन साथी के धोखे के चलते मरने को तैयार थी लक्ष्मी
- सीएचसी से मिले सही परामर्श ने बचा लीं दो जिंदगियां

मेरा नाम लक्ष्मी (काल्पनिक नाम) है। मेरे पति निजी क्षेत्र में कर्मचारी हैं। मेरी शादी को अभी तीन माह ही हुए हैं। इस बीच जब किसी कारणवश मेरे रक्त की जांच की गई तो मुझे पता चला कि मैं एचआईवी पाजिटिव हूं। इसके बाद जब मेरे पति का टैस्ट करवाया गया तो वह भी एचआईवी पाजिटिव पाए गए।

इस तरह शादी की मेहंदी अभी हाथों से उतरी ही नहीं थी कि लक्ष्मी का वैवाहिक जीवन इस बीमारी के कारण तहसनहस होकर रह गया। वह खुद को ठगा महसूस कर रही थी और अपने पति को भी इस हालात का गुनहगार मान रही थी। लक्ष्मी ने बताया कि उसे नहीं पता कि उसके पति एचआईवी पाजिटिव कैसे हुए, लेकिन वह अपने पति की इस गलती के कारण जरूर एचआईवी का शिकार हुई थी। वैवाहिक जीवन के शुरुआत में ही एचआईवी का बज्रपात होने के कारण सब कुछ तहसनहस हो चुका था।

लक्ष्मी बताती है कि जब उसके एचआईवी पाजिटिव होने की रिपोर्ट आई तो उसके पति ने न तो उससे पूछा और न ही इसके कारण को बारे में कोई चरचा की। वह इतनी बड़ी बात होने पर भी चुप रहे। इसके चलते वह समझ गई थी कि एचआईवी पाजिटिव होने के पीछे उसके पति की ही कोई गलती थी। इसकी सजा आज वह भी भुगतने जा रही थी।

लक्ष्मी को जब एचआईवी का शिकार होने का पता चला तो वह ऐसी स्थिति में आ गई थी कि न तो उसने डाक्टर की बात सुनी और न ही काऊंसलर की। वह अपने पति से नाराज थी और अपनी किस्मत पर रो रही थी। लक्ष्मी बताती है कि उसके जीवन में खुशियां आने से पहले ही मौत का गम आ गया था। उसे ऐसा लग रहा था कि अब वह मर जाए तो अच्छा है,या फिर वह इस बीमारी के कारण ही मर जाएगी। इसके बाद उसने अपने पति को बहुत भला-बूरा कहा, उस पर चिल्लाई और रोती रही, मगर इससे कुछ फर्क नहीं पड़ा। जो होना था वह तो हो चुका है, बस वह यह सोचकर शांत हो गई।

अचानक आई इस मुसीबत के कारण वह ऐसे हालात में जा चुकी कि अब न तो उसे खाने की इच्छा हो रही थी और न ही सजने-संवरने की। वह घर में ही पड़ी रहती थी, कहीं बाहर जाने का मन भी नहीं करता था। इस कारण उसका मन व शरीर जवाब देने लगा था। कभी-कभी

रात को भी वह उठ जाती और दिमागी तौर पर परेशानी घेर कर उसे सोने नहीं देती। इसके कारण उसने अपने पति से दो माह तक बात नहीं की। फिर एक दिन वह टांडा अस्पताल गए। वहां पर उनकी मुलाकात कम्युनिटी स्पोर्ट सेंटर की काऊंसलर रजनी से बात की।

लक्ष्मी के पति ने उसके हालात के बारे में काऊंसलर को बताया तो उसने लक्ष्मी को सेंटर में लेकर आने की सलाह दी। इस पर उसके पति ने काऊंसलर को लक्ष्मी के मोबाइल फोन पर उसकी बात करवाई। जब काऊंसलर ने उसे समझा कर सीएससी में आने को कहा, तो उसने आने से इनकार कर दिया और काऊंसलर की बात नहीं मानी। बार-बार फोन करने के कारण एक दिन वह खुद ही वहां जाने को राजी हो गई और अपने पति के साथ सीएससी में आईं।

काऊंसलर ने लक्ष्मी को समझाया कि जैसा वह समझ रहीं है, वैसा कुछ नहीं हुआ है। उसे समझाया गया कि समाज में कितने लोग दिल की बीमारी से पीड़ित हैं, कई लोग बीपी के मरीज हैं, अगर वे दवाई नहीं खाएंगे तो इन बीमारियों के कारण मर जाएंगे। वैसे ही एचआईवी प्रभावित मरीजों को भी नियमित दवाई की जरूरत होती है।

लक्ष्मी को यह भी बताया गया कि पहले लोग टीबी की बीमारी के कारण इतना डर जाते थे और इसे जीवन के लिए खतरा मानते थे, मगर इस बीमारी का ईलाज होने लगा तो डर कम हुआ। इसी प्रकार एचआईवी के दुष्प्रभावों को भी ईलाज से कम किया जा सकता है। उसे समझाया गया कि जो हो चुका है, उसकी चिंता छोड़ कर भविष्य की ओर देखा जाए।

काऊंसलर ने उसे तीन-चार अन्य प्रभावित लोगों से मिलवाया। जब लक्ष्मी ने उनका दर्द जाना तो पता चला कि उनकी समस्या तो उसकी समस्या से कहीं ज्यादा है। उसे यह बात समझ आई कि कम से कम उसका पति तो उसका साथ देने को तैयार है। इस तरह सही परामर्श के कारण लक्ष्मी का उसके पति से मनमुटाव खात्म हुआ। लक्ष्मी भी पेरशानी व दबाव से बाहर आई और उसमें फिर से जीने की चाह पैदा हो गई। स्थिति सुधरी देख कर उन दोनों को पीपीटीसी कार्यक्रम से जोड़ा गया। अब लक्ष्मी नियमित परामर्श व दवा का सेवन कर रही हैं।

इंडस्ट्रियल सेफ्टी मैनेजमेंट में हैं करियर के चांस

प्राकृतिक आपदा के खतरे को देखते हुए पूरे विश्व में सुरक्षा, संरक्षा, पर्यावरण की सुरक्षा के साथ ही प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित रखने के लिए इंडस्ट्रियल सेफ्टी मैनेजमेंट की क्षमता को बढ़ावा दिया जा रहा है, इसलिए इसमें करियर की काफी संभावनाएं हैं। किसी भी देश में वहां के निवासियों की जान-माल की सुरक्षा को सर्वोपरि रखा जाता है और इस सुरक्षा व्यवस्था को नित्य नए तरीकों से बनाए रखने के लिए विशेषज्ञों द्वारा जी-तोड़ मेहनत की जाती है। जिन्हें सामान्य रूप से सेफ्टी मैनेजर, फायर प्रोटेक्शन इंजीनियर, रिस्क मैनेजमेंट कंसलटेंट जैसे व्यक्तियों द्वारा अंजाम दिया जाता है। इन सभी पदों पर कार्य करने के लिए एक विशेष कोर्स की दरकार होती है, जिसे इंडस्ट्रियल सेफ्टी मैनेजमेंट कहा जाता है। विशेषज्ञ बताते हैं कि इस पाठ्यक्रम का मकसद सुरक्षा के हर संभावित उपाय को बनाए रखने एवं उनकी मॉनीटरिंग से लेकर उपकरणों की जांच, लोगों की रक्षा आदि है। इसके लिए एनबीसी एवं ओसा द्वारा बाकायदा कोड तैयार किया गया है, ताकि इन्हें एक दायरे में बांधा जा सके। ऊंची इमारतों के अंदर सेफ्टी कमेटी की स्थिति से लेकर उनकी स्थापना, आंतरिक उपकरणों की जांच, प्रोडक्ट के साइड इफेक्ट, हेल्मेट-जैकेट पहनने को बाध्य करने, सेफ्टी सिंबल्स की उपस्थिति तथा समय-समय पर मॉक ड्रिल कराये जाने की व्यवस्था सेफ्टी मैनेजमेंट पाठ्यक्रम का प्रमुख मकसद है। इसके अलावा खतरों को कम करने, कर्मचारियों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाना आदि भी शामिल है। प्रकृतिक आपदा के खतरे को देखते हुए मानव पूंजी की रक्षा, पर्यावरण की सुरक्षा के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित रखने के लिए इंडस्ट्रियल सेफ्टी मैनेजमेंट की क्षमता को बढ़ावा दिया जाना आवश्यक है।

क्या है कोर्स में प्रवेश की योग्यता

सुरक्षा के लिहाज से तैयार किए गए इस पाठयक्रम में दाखिले के लिए इच्छुक छात्रों को कम से कम बारहवीं होना जरूरी है, जबकि ग्रेजुएट एवं इंजीनियरिंग बैकग्राउंड वाले छात्रों को वरीयता दी जाती है। अधिकांश ऐसे छात्र भी है, जो पहले से ही फायर इंजीनियरिंग के क्षेत्र में कार्यरत होते हैं, वे भी इसमें आवेदन के योग्य होते हैं। साथ ही अनेक संस्थानों द्वारा कई तरह के डिप्लोमा एवं सर्टिफिकेट कोर्स भी चलाए जाते हैं, जो रेगुलर अथवा पत्राचार, दोनों विधियों के जरिए किए जा सकते हैं।

पाठयक्रम एवं उससे लाभ

इंडस्ट्रियल सेफ्टी मैनेजमेंट में कई तरह के डिप्लोमा, सर्टिफिकेट एवं अन्य शार्ट टर्म पाठ्यक्रम मौजूद हैं। इनकी अवधि तीन माह, छह माह तथा बारह माह तक की है। आजकल पत्राचार एवं पार्टटाइम कोर्सों की भी भरमार है। इन्हें कर लेने के पश्चात छात्रों को व्यक्तिगत रूप से अपनी जानकारी बढ़ाने जैसे इंजीनियरिंग कंट्रोल एवं एप्लीकेशन, इंडस्ट्रियल उपकरणों की सुरक्षा की मॉनीटरिंग, पेट्रोलियम इंडस्ट्री, न्यूक्लियर पावर प्लांट में आपातकालीन नियंत्रण, मेडिकल विजिलेंस, खराब हो चुके उपकरणों का मरम्मत कार्य, खतरनाक एवं जख्मी स्थिति से बचाव आदि का मौका मिलता है।

कई क्षेत्रों में है अवसर

आजकल आईटी इंडस्ट्री, माइनिंग, ऑयल इंडस्ट्री, कंस्ट्रक्शन आदि में रोजगार की अधिक संभावनाएं बन रही हैं। भारत तथा विदेश, दोनों जगह अवसर सामने आते हैं। इंडस्ट्रियल सेफ्टी मैनेजमेंट का सफलतापूर्वक पाठयक्रम करने के पश्चात भारत में फायर प्रोटेक्शन इंजीनियर, एनवॉयरमेंट सेफ्टी मैनेजर, इंजीनियर हाइजीन मैनेजर, सिस्टम सेफ्टी इंजीनियर, रिस्क मैनजमेंट कंसलटेंट कंस्ट्रक्शन सेफ्टी इंजीनियर, ट्रांसपोर्टेशन सेफ्टी सुपरवाइजर के रूप में अवसर मिलते हैं। इसके अलावा सेल, टिस्को, कोल इंडिया लिमिटेड, भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर, एनटीपीसी एवं इंडियन ऑयल जैसी कंपनियां डिप्लोमा अथवा डिग्रीधारक को अपने यहां नियुक्त करती हैं। जबकि यूएई, अफगानिस्तान, इंग्लैंड, रूस, ओमान आदि देशों में प्लांट सेफ्टी मैनेजर, सेफ्टी को ऑर्डिनेटर, फायर प्रोटेक्शन मैनेजर के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। इसमें से ज्यादातर छात्र टीएफएल इंटरनेशनल, ब्रिटिश पेट्रोलियम, ओम्नी ऑयल टेक्नीक, सेल आर्मको कॉपोरेशन, पेट्रोफेक जैसी जानी-मानी कंपनियों में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

कार्य का विविध स्वरूप

सेफ्टी मैनेजर को पाठयक्रम के दौरान ही सभी संभावित जानकारी दे दी जाती है, जिनमें मुख्य रूप से फायर फाइटिंग, फायर प्रिवेंशियल, लेबर एवं फैक्टरी एक्ट के कोड की जानकारी, दुर्घटना के पश्चात प्राथमिक मदद उपलब्ध कराना आदि शामिल हैं। इसमें कार्य के दौरान पर्सनल प्रोटेक्टिव एक्विपमेंट्स पर विशेष ध्यान दिया जाता है। बिल्डिंग के अंदर लगे फायर उपकरणों की जांच करके सभी जरूरी जानकारी को मैनेजमेंट तक पहुंचाना भी इसी के अंतर्गत आता है।

कितनी होती है कमाई

सेफ्टी मैनेजर को प्रारंभ में 20-25 हजार रुपये प्रतिमाह तथा कंस्ट्रक्शन सेफ्टी इंजी. को 20 हजार रुपये मिलते हैं।

पाठयक्रम योग्यता

डिप्लोमा इन इंडस्ट्रियल सेफ्टी मैनेजमेंट के लिए जमा दो

डिप्लोमा इन फायर टेक्नोलोजी एंड इंडस्ट्रियल सेफ्टी मैनेजमेंट के लिए जमा दो

सर्टिफिकेट कोर्स ऑफ चीफ सिक्योरिटी ऑफिसर के लिए स्नातक

हेल्थ सेफ्टी इन्वॉयरन्मेंट के लिए जमा दो

प्रमुख संस्थान

राष्ट्रीय अग्निशमन सेवा महाविद्यालय, नागपुर

www.nfscnagpur.nic.in

दिल्ली कॉलेज ऑफ फायर एंड सेफ्टी इंजीनियरिंग, नई दिल्ली,

www.dcfse.com

कॉलेज ऑफ फायर टेक्नोलॉजी, साणंद, अहमदाबाद

www.collegeoffiretechnology.com

इंस्टीट्यूट ऑफ डिजास्टर मैनेजमेंट एंड फायर सेफ्टी, मोहाली, पंजाब

www.idmfs.com

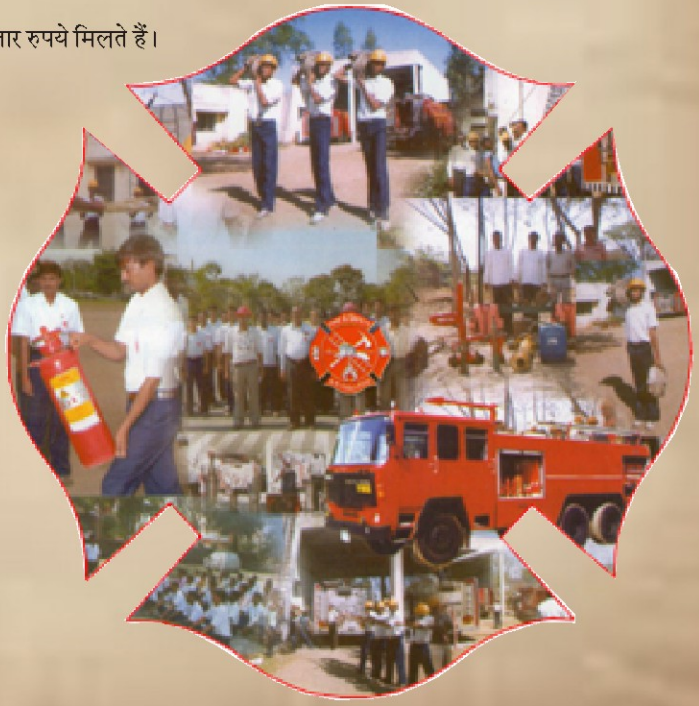

आरआरटीसी के सौजन्य से कवि सम्मेलन आयोजित

धर्मशाला। सूचना एवं लोक सम्पर्क के क्षेत्रीय कार्यालय और गुंजन व रैंपस संस्थाओं के सहयोग से सिद्धबाड़ी स्थित केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के रीजनल रिसोर्स ट्रेनिंग सेंटर के सभागार में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें जिला भर के प्रतिष्ठित कवियों ने अपनी समकालीन कविताओं और गजलों से समां बांधा। इस कवि सम्मेलन में कवियों ने हिन्दी और पहाड़ी के अलावा अंग्रेजी भाषा में अपनी प्रतिभा की चमक बिखेरी।

कवयित्री कांति सूद ने कन्या भ्रूण हत्या पर, 'मैं तुम्हारी अजन्मी अभिलाषा हूं' एवं माँ की महिमा पर 'माँ की शान निराली' और बेटी की महत्ता को रेखांकित करते हुए दुर्गेश नन्दन ने 'बेटी दस की हुई मेरी आँखें पाँच की' कविताएं प्रस्तुत कीं। सतपाल घृतवंशी ने जयन्ती माँ पर 'कांगड़े दे किले पारें चला जाए, माता दे भगता' अपनी रचना प्रस्तुत की। डॉ० कुशल कटोच ने समाज में बुजुर्गों की दशा पर 'साठ साल के चेहरे पर सौ साल की झुर्रियां हैं' और पहाड़ी कविता प्रस्तुत कीं। डॉ० कंवर कुलतार ने पहाड़ी गजल 'दुश्मणे ने भी प्यारे ने बोली के, मिठ्ठियां गल्लां-गल्लां भेद खोली दे' और हिन्दी कविता 'स्वामीभक्त कुत्ता पूँछ हिलाता' और डॉ० वासुदेव प्रशान्त ने 'भारत के अमर सपूतों ने किया निज शीश देश को अर्पण' प्रस्तुत कीं। नवनीत शर्मा ने अपनी गजल 'मुझे तो लग रहा है, हाथ पीले हो गए हैं, कि खो कर ताजगी ये धूप कुछ पीली हुई है, और कविताएं 'ठुमको' और 'सो रहे हैं लोग' प्रस्तुत की। पी० पी० रैणा ने अपनी कविता 'उंगलियां थामे जिन्हें चलना सिखाया, कर गए वे पार सारी सरहदें' और डॉ० एल०एम० शर्मा ने अंग्रेजी कविता 'दैट इज नॉट कंट्री फार यंग विमैन' प्रस्तुत कीं। अजय पाराशर ने दोहे 'दु:शासन-द्रौपदी मिल कर खेलें खेल, चीरहरण के केस में कृष्ण भेजे जेल' और कविता 'लाल किले की प्राचीर से' तथा डॉ० प्रत्यूष गुलेरी ने 'मैं कोई बड़ा कवि नहीं', 'उमड़ी-घुमड़ी आए बद्दल' और ऊँ नम: शिवाय' प्रस्तुत कीं। डॉ० पीयूष गुलेरी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए हिन्दी गजल 'गढ़ दिया बरतन अजब, कहती है मेरी आत्मा' प्रस्तुत की।

डॉ० वेद प्रकाश अग्नि ने बतौर मुख्य अतिथि अपने अभिधान में कविता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जब हम आत्मा के नजदीक होते हैं तो कविता प्रस्फुटित होती है। आत्मा से जो विचार निसृत होते हैं, वहीं कविता होती है।

रैंपस के अध्यक्ष पी० पी० रैणा ने प्रभिागियों का स्वागत किया। गुंजन के निदेशक संदीप परमार ने अपने धन्यवाद प्रस्ताव में कवि सम्मेलन की उपयोगिता पर प्रकाश डाला और भविष्य में जिला से बाहर के कवियों को आमंत्रित करने का सुझाव रखा। इस अवसर पर अन्यों के अतिरिक्त डॉ० कुलदीप शर्मा, नरेन्द्र शर्मा भी उपस्थित थे।

आई.ई.सी. मेटिरियल डवेलप्मेंट - पोस्टर श्रृंखला

सत्यमेव जयते
Ministry of Social Justice & Empowerment
Gunjan
Organisation for Community Development
NISD
Gunjan Organisation for Community Development° Regional Resource & Training Centre North - II, Tapovan Road, Tehsil-Dharamshala, Distt. Kangra (H.P.) - 176057
Phone : 91-1892-235315, 208255, 9459082624, Email: rrtcnorth.hp@gmail.com, Website: www.gunjanindia.org